Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 07.12.18 मस्जिद बैतुल फ़तूह, मार्डन, लंदन।

आँज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान एवं उच्च स्तरीय बद्री सहाबी हज़रत उबैद बिन अन्सारी, हज़रत ज़ाहिर बिन हराम अश्जअी, हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब, हज़रत अबादा बिन ख़श्ख़ास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द तथा हज़रत हारिस बिन औस बिन मुआज़ रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन के ईमान वर्धक वृत्तांतों का मनमोहक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज जिन सहाबियों का वर्णन होगा उनमें पहला नाम है हज़रत उबैद बिन ज़ैद अन्सारी का, इनका सम्बंध बनू अजलान के क़बीले से था तथा बद्र एवं ओहद की लड़ाईयों में ये सम्मिलित हुए। हज़रत मुआज़ बिन रफ़ाअ अपने वालिद के माध्यम से कहते हैं कि मैं अपने भाई हज़रत ख़लाद बिन राफ़े के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक दुर्बल ऊँट पर सवार होकर बद्र की ओर निकला। हमारे साथ उबैद बिन ज़ैद भी थे। जब हम बरीदा नामक स्थान पर पहुंचे जो रौहा नामक स्थान से पीछे है तो हमारा ऊँट बैठ गया। मैंने दुआ की कि ऐ अल्लाह तेरे लिए नज़र मानते हैं कि यदि हम मदीना पहुंच जाएँ तो हम इसको क़ुर्बान कर देंगे। कहते हैं कि हम इसी परिस्थिति में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे निकट से गुज़रे। आपने हमसे पूछा कि तुम दोनों को क्या हुआ है? हमने सारी बात बताई फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास रुके, आपने वज़ू फ़रमाया तथा बचा हुए पानी में अपने मुंह का थूक डाला फिर आपके आदेशानुसार हमने ऊँट का मुंह खोल दिया। आपने ऊँट के मुंह में कुछ पानी डाला, फिर उसके सिर पर, उसकी गर्दन पर, उसके कांधे पर, उसकी कोहान पर, उसकी पीठ पर और कुछ पानी उसकी दुम पर डाला। फिर आपने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह राफ़े और ख़ल्लाद को इस पर सवार करके ले जा। फिर ये कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो चले गए हम भी चल पड़े, यहाँ तक हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुंसफ़ नामक स्थान के आरम्भ में ही पा लिया। हमारा ऊँट उस दल में सबसे आगे था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें देखा तो मुस्कुरा दिए। हम चलते रहे, यहाँ तक बद्र के गणतव्य तक पहुंच गए तथा बद्र से वापसी पर हमारा ऊँट मुसल्ला नामक स्थान पर बैठ गया और फिर मेरे भाई ने उसको हलाल कर दिया तथा उसका मांस दान कर दिया। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस घटना में हज़रत उबैद बिन अन्सारी भी शामिल थे।

हज़रत ज़ाहिर बिन हराम अश्जअी एक सहाबी थे, ये भी बद्री सहाबी हैं इनका सम्बंध अश्जआ क़बीले से था। बद्र के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ये भी शामिल हुए। हज़रत अनस बिन मालिक कहते हैं कि जंगल में भ्रमण करने वालों में एक आदमी था जिनका नाम ज़ाहिर था वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से उपहार लाया करता था और जब वे जाने लगते थे तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनको पर्याप्त धन राशि देकर भेजते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि ज़ाहिर हमारे बादिया नशीन

दोस्त हैं तथा हम इनके शहरी मित्र हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे स्नेह रखते थे। हज़रत ज़ाहिर साधारण व्यक्तित्व के पुरुष थे, एक दिन ऐसा हुआ कि हज़रत ज़ाहिर बाज़ार में अपना कुछ सामान बेच रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए तथा पीछे से उन्हें अपनी छाती से लगा लिया। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पीछे आकर उनकी आँखों पर हाथ रख लिया। हज़रत ज़ाहिर हुज़ूर स. को नहीं देख पा रहे थे, उन्होंने पूछा कौन है? मुझे छोड़ दो, किन्तु जब उन्होंने अनुभव किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं तो अपनी कमर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र छाती से रगड़ने लगे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कटाक्ष किया कि कौन इस सेवक को ख़रीदेगा। हज़रत ज़ाहिर ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह, तब तो आप मुझे घाटे का सौदा पाएँगे, मुझे किसने ख़रीदना है? इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- अल्लाह की दृष्टि में तुम घाटे का सौदा नहीं हो अथवा फ़रमाया कि अल्लाह के समक्ष तुम बड़े मूल्यवान हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि प्रत्येक शहर के रहने वाले का कोई न कोई गाँव का सम्बंधी होता है तथा आल-ए-मुहम्मद के गाँव के सम्बंधी ज़ाहिर बिन हराम हैं। ज़ाहिर बिन हराम बाद में कूफ़ा चले गए थे।

अगले सहाबी, जिनका वर्णन है उनका नाम है हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब, आप हज़रत उमर के बड़े भाई थे तथा हज़रत उमर के इस्लाम क़बूल करने से पहले इस्लाम लाए थे, ये आरम्भिक हिजरत करने वालों में से भी थे। आप बद्र, ओहद, ख़ंदक़ तथा हुदैबियः में बैअत-ए-रिज़वान सहित सभी युद्धों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपका बन्धुत्व का सम्बंध हज़रत मुअन बिन अदी से कराया था। ये दोनों सहाबी यमामा के युद्ध में शहीद हुए। ओहद के संग्राम के दिन हज़रत उमर ने हज़रत ज़ैद को अल्लाह की क़सम देकर फ़रमाया कि मेरा युद्ध कवच पहन लो, हज़रत ज़ैद ने कुछ समय के लिए कवच पहन लिया फिर उतार दिया। हज़रत उमर ने कवच उतारने का कारण पूछा तो हज़रत ज़ैद ने उत्तर दिया कि मैं भी उसी शहादत का अभिलाषी हूँ जिसकी आप इच्छा कर रहे हैं और इस प्रकार दोनों ने कवच को छोड़ दिया।

हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि हज्जतुल विदा के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने सेवकों का ध्यान रखो, उन्हें उसी में से खिलाओ जो तुम खाते हो और उन्हें वही पहनाओ तो स्वयं तुम पहनते हो तथा यदि उनसे कोई ग़लती हो जाए जिस पर तुम उनको क्षमा न करना चाहो तो ऐ अल्लाह के बन्दो! उन्हें बेच दिया करो तथा उन्हें दंडित मत किया करो। यमामा के युद्ध के समय जब मुसलमानों के पाँव उखड़े तो हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब उच्च स्वर के साथ यह दुआ करने लगे कि ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपने साथियों के भाग जाने पर क्षमा चाहता हूँ और मुसैलमा कज़्ज़ाब तथा मोहकम बिन तुफ़ैल ने जो काम किया है, उससे तेरे समक्ष अपना बरी होना प्रकट करता हूँ। फिर आप झंडे को मज़बूती से पकड़ कर शत्रु की पंक्तियों में आगे बढ़कर अपनी तलवार के जौहर दिखाने लगे यहाँ तक कि आप शहीद हो गए। जब हज़रत ज़ैद शहीद हो गए तो हज़रत उमर ने फ़रमाया- अल्लाह ज़ैद पर रहम करे मेरा भाई दो नेकियों में मुझ पर प्राथ्मिकता ले गया, अर्थात इस्लाम क़बूल करने में भी तथा शहीद भी मुझसे पहले हो गया। एक रिवायत में है कि हज़रत उमर ने मुतमिम बिन नवेरा को अपने भाई मालिक बिन नवेरा की याद में शोक कविता कहते सुना तो हज़रत उमर ने फ़रमाया कि यदि मैं भी तुम्हारी भांति अच्छी कविता कहता होता तो अपने भाई ज़ैद की याद में ऐसी ही कविता कहता जैसी तुमने अपने भाई के लिए कही है, तो मुतमिम बिन नवैरा ने कहा कि यदि मेरा भाई भी इसी प्रकार दुनिया से गया होता जैसे आपका भाई गया है तो मैं भी उस पर दुःखी न होता। इस पर हज़रत उमर ने फ़रमाया कि आज तक कभी किसी ने मुझसे ऐसी संवेदना प्रकट नहीं की जैसी तुमने की है।

इस घटना का एक अन्य विस्तृत वर्णन भी मिलता है कि हज़रत उमर ने हज़रत मुतमिम बिन नवेरा से फ़रमाया कि तुम्हें अपने भाई का कितना अधिक खेद है। उन्होंने अपनी एक आँख की ओर संकेत करते हुए कहा कि यह मेरी आँख

उसी के दुःख में ख़राब हुई है, मैं अपनी स्वस्थ आँख के साथ इतना रोया कि ख़राब होने वाली आँख ने भी आँसू बहाने में उसकी सहायता की है। हज़रत उमर ने फ़रमाया कि यह इतना घोर दुःख है कि किसी ने अपने मरने वाले के लिए इतने अधिक शोक को प्रकट न किया होगा। फिर हज़रत उमर ने फ़रमाया कि अल्लाह ज़ैद बिन ख़त्ताब पर रहमत करे यदि मैं कविता कहने का सामर्थ्य रखता तो मैं भी अवश्य हज़रत ज़ैद पर उसी प्रकार रोता जिस प्रकार तुम अपने भाई के लिए रोते हो। हज़रत मुतमिम ने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! यदि मेरा भाई यमामा के युद्ध में उसी प्रकार शहीद होता जिस प्रकार आपके भाई शहीद हुए हैं तो मैं कभी इस पर न रोता। यह बात हज़रत उमर के दिल को लगी, अपने भाई की प्रति आपको संतुष्टि हो गई और हज़रत उमर को अपने भाई की जुदाई का बड़ा दुःख था, आप फ़रमाया करते थे कि जब पवन चलती है तो मेरे पास ज़ैद की सुगन्ध लाती है।

हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब को अबू मरयम अलहनफ़ी ने शहीद किया था। हज़रत उमर ने एक बार अबू मरयम से, जब उसने इस्लाम क़बूल कर लिया था पूछा कि क्या तुमने ज़ैद को शहीद किया था? उसने हज़रत उमर से कहा कि अल्लाह तआला ने ज़ैद को मेरे हाथों से सम्मान प्रदान कराया तथा मुझे उनके हाथों से अपमानित नहीं किया। हज़रत उमर ने अबू मरयम से फ़रमाया कि तुम्हारे विचार से उस दिन यमामा के युद्ध के समय मुसलमानों ने तुम्हारे कितने लोगों का वध किया था। अबू मरयम ने कहा- चौदह सौ या उससे कुछ अधिक। हज़रत उमर ने फ़रमाया- बिइसल क़त्ल, अर्थात क्या ही बुरे मरने वाले हैं ये। अबू मरयम ने कहा कि समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे बचाए रखा यहाँ तक मैं इस दीन ओर पलट आया जो उसने अपने नबी तथा मुसलमानों के लिए पसन्द फ़रमाया। हज़रत उमर, अबू मरयम की इस बात से बड़े प्रसन्न हुए। अबू मरयम बाद में बसरा के क़ाज़ी भी बने।

अगले सहाबी जिनका वर्णन है उनका नाम है हज़रत अबादा बिन ख़श्ख़ास। हज़रत मुजज़र बिन ज़ियाद के चचेरे भाई थे। हज़रत अबादा बिन ख़श्ख़ास बद्र की लड़ाई में शरीक थे। आपने क़ैस बिन सायब को बद्र के युद्ध में बन्दी बनाया था। हज़रत अबादा बिन ख़श्ख़ास ओहद की लड़ाई में शहीद हुए आपको हज़रत नोअमान बिन मालिक और हज़रत मुजज़र बिन ज़ियाद के साथ एक ही कब्र में दफ़न किया गया।

अगले सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द हैं, इनके वालिद का नाम जद्द बिन क़ैस था उनका उपनाम अबू वहब था, उनका क़बीला बनू सलमा से था जो अन्सार का एक क़बीला था। हज़रत मुआज़ बिन जबल वालिदा की ओर से आपके भाई थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द बद्र तथा ओहद के युद्धों में शामिल हुए।

अगले जिन सहाबी का वर्णन है, ये हज़रत हारिस बिन औस बिन मुआज़ हैं। आप क़बीला औस के सरदार हज़रत सअद बिन मुआज़ के भतीजे थे, बद्र तथा ओहद के युद्धों में शरीक हुए। इनके बारे में कहा जाता है कि अट्ठाईस वर्ष की आयु में ओहद की लड़ाई में शहीद हुए किन्तु कुछ अन्य माध्यमों से यह पता चलता है कि आप ओहद की लड़ाई में शहीद नहीं हुए। हज़रत हारिस के विषय में कहा जाता है कि आप उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने कअब बिन अशरफ़ का वध किया था तथा उस पर आक्रमण के समय आपके पाँव में घाव लगा तथा उससे रक्त बहने लगा। अपने साथियों की तलवार की नोक से घाव लगा था अतः आपके साथी उन्हें उठाकर तीव्रता से मदीने पहुंचे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। अतः नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिस बिन औस के घाव पर अपना मुंह का लुआब लगाया तथा उसके बाद उन्हें पीड़ा नहीं हुई।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस घटना का विवरण जो हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन साहब ने लिखा है वह बयान करता हूँ। कअब को यह सम्मान प्राप्त था कि अरब के यहूदी उसे अपना सरदार समझते थे परन्तु चरित्र की दृष्टि से वह बड़े गन्दे चरित्र वाला था। गुप्त छल कपट तथा झूठ बोलने में निपुण था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मदीना हिजरत की तो कअब बिन अशरफ़ दूसरे यहूदियों के साथ मिलकर उस सन्धि में शामिल हुआ परन्तु भीतर ही भीतर कअब के दिल में मुसलमानों के विरुद्ध द्वेष एवं शत्रुता की अग्नि सुलगने लगी तथा बद्र के युद्ध के पश्चात तो उसने ऐसा व्यवहार किया जो बड़ा उपद्रवी था। बद्र की लड़ाई के बाद यह मक्का गया तथा अपनी वाकपटुता तथा कविता से क़ुरैश के

दिलों में मुसलमानों से बदला लेने की आग भड़का दी। इसी प्रकार उसने दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध भड़काया तथा मुसलमान महिलाओं के विषय में बड़े गन्दे एवं अशलील ढंग से प्रचार किया यहाँ तक कि नबी स. के परिवार की महिलाओं को भी उन भद्दी कविताओं से निशाना बनाया तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वध तक का षड्यन्त्र किया। जब यहाँ तक नोबत आ गई और कअब के विरुद्ध सन्धि खंडन, विद्रोह, युद्ध के लिए भड़काना, फ़ितना फैलाना तथा वध की योजना के प्रमाण मिल गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने का अध्यक्ष होने तथा उच्चतम निर्णायक के रूप में यह फ़ैसला फ़रमाया कि कअब बिन अशरफ़ अपनी गतिविधियों के कारण वध किए जाने का अधिकारी है तथा अपने सहाबियों से फ़रमाया कि उसको गुप्त रूप से मार दिया जाए। आपने यह ड्यूटी औस क़बीले के एक निष्ठावान सहाबी मुहम्मद बिन मुस्लिमा के सपुर्द फ़रमाई।

जब कअब के वध की सूचना विख्यात हुई तो सब यहूदी जोश में आ गए। अगले दिन यहूदियों का एक प्रतिनिधि मंडल आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा शिकायत करने लगा कि हमारे सरदार कअब बिन अशरफ़ की हत्या कर दी गई है तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी बात सुनकर कहा कि अच्छा, मुझे नहीं पता, कोई ऐसी बात नहीं हुई। आपने फ़रमाया कि तुम्हें पता है कि कअब ने कौन कौनसा दोष किया हुआ है, फिर आपने संक्षेप में उनको कअब की सन्धि विच्छेद, युद्ध के लिए भड़काना, फ़ितना फैलान, वध का षड्यन्त्र, अशलील बातें इत्यादि की गतिविधियाँ याद दिलाईं जिस पर डर कर ये लोग चुप हो गए तथा उनको पता चल गया कि हाँ बात तो ठीक है तथा यही उसका दंड होना चाहिए था।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब लिखते हैं कि पश्चिमी इतिहासकार यह आपत्ति करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अनुचित वध कराया और यह अनुचित बात थी।

उसके उत्तर में आप लिखते हैं कि आजकल सभ्य कहलाए जाने वाले देशों में उपद्रव, सन्धि तोड़ना, युद्ध के लिए भड़काना तथा वध के षड्यन्त्र के दोषों में दोषियों को वध का दंड दिया जाता है तो फिर आपत्ति किस बात की?

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फिर दूसरा सवाल वध की रीति का है कि उसको गुप्त रूप से क्यूँ रात के समय मारा गया तो उसके विषय में वे कहते हैं कि याद रखना चाहिए कि अरब में उस समय कोई नियमानुसार सरकार नहीं थी। एक मुख्या तो बना लिया था किन्तु प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रत्येक क़बीला स्वतंत्र और स्वावलम्बी भी था तो ऐसी अवस्था में वह कौनसी अदालत थी जहाँ कअब के विरुद्ध अभियोग चलाकर नियमानुसार वध का आदेश पारित किया जाता। यहूदी ग़द्दारी कर चुके थे। क़बीले सलीम और मदीना के ग़तफ़ान पर छापे मारने की तय्यारी कर चुके थे ऐसी अवस्था में मुसलमानों के लिए इसके अतिरिक्त और कौनसा रास्ता खुला था कि अपनी सुरक्षा के विचार से अवसर पाकर उसका वध कर देते क्यूँकि यही उचित था कि एक उपद्रवी तथा फ़साद फैलाने वाला आदमी मारा जाए बजाए इसके कि अनेक शांति प्रिय वासियों की जान ख़तरे में पड़े तथा देश की शांति भंग हो।

इस लिए तेरह सौ वर्ष के बाद इस्लाम पर आपत्ति करने वालों की यह आपत्ति व्यर्थ है क्यूँकि उस समय तो यहूदियों ने भी आपकी बात सुनकर कोई आपत्ति नहीं की। अल्लाह तआला सदैव इस्लाम को भी उन फ़ितनों से सुरक्षित रखे तथा इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए हादी को जो इस्लाम के नवजीवन के लिए आया है, मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने के लिए सुझाव का स्वागत है- अनुवादक-9781831652)

TOLL FREE NO: 180030102131